चिन्ह मिला था जो अशोक के स्तम्भ पर खुदा था । इसके टुकड़ों को जोड़कर वर्तमान चिन्ह बनाया गया है ।

प्राचीन बौद्ध मठों के खण्डहर, यहां बौद्ध संस्कृति के केन्द्र व तीर्थ का प्रमाण हैं । यहां स्वयं अशोक ने मठ की स्थापना की थी । यहां भिक्षुओं को पढ़ाने का अच्छा संस्थान था, यहां से मैंने बौद्ध धर्म के दो ग्रन्थ खरीदे । एक का नाम है बौद्धचर्या, दूसरा था धम्मपद । यह पाली संस्थान से बौद्ध ग्रन्थों पर विशाल स्तर पर काम होता है । यहां सारे ग्रन्थों को पुनः प्रकाशित करवाया जा रहा है । भगवान बुद्ध के २५०० साला निर्वाण महोत्सव पर भारत सरकार ने समस्त पाली साहित्य का देवानगरी में करवाकर प्रकाशित करवाया ।

अब रात्रि होने वाली थी । टैक्सी वाले ने हमें कहा, "यहां एक प्राचीन श्वेताम्बर जैन मन्दिर देखने योग्य है ।" हमारी इच्छा को जानकर उसने गाड़ी इस मन्दिर की ओर घुमा दी । यह वाराणसी स्टेशन से ३ कि.मी. दूर मध्य में गंगा के किनारे है । इसकी कला अत्यन्त दर्शनीय है । प्रभु पार्श्वनाथ का उपदेश स्थल होने के कारण इसे पवित्र माना जाता है । मन्दिर विशाल है, इसमें वर्तमान के २४ तीर्थंकरों की प्रतिमाएं स्थापित हैं ।

भूत, वर्तमान और भविष्य की चौवीसी व २० विहरमान तीर्थंकरों की सुन्दर प्रतिमाएं हैं । यह शाश्वत तीर्थंकरों का पट्ट है । यहां ९६ तीर्थंकरों की प्रतिमाएं हैं । ऐसी भव्य प्रतिमाएं दुर्लभ हैं । यह उपाश्रय और शास्त्रों का विशाल भण्डार है । मन्दिर के निकट ही ८ जैन मन्दिर हैं ।

वाराणसी में बहुत कुछ देखने योग्य है । असल में यहां आकर व्यक्ति कुछ भी छोड़ नहीं सकता । इस यात्रा का इतना सार है कि यहां आकर व्यक्ति हर क्षण, हर पल प्रभु

भक्ति में डूबा रहता है । यहां की धरती के सूक्ष्म कणों में वह शक्ति है कि व्यक्ति को दूर से खींचती है ।

वाराणसी में सभी कुछ देखने योग्य है । मार्ग में व्यास देव का मन्दिर है । इन सभी मन्दिरों में हमें कुछ क्षण प्रभु को नजदीक पाने का अवसर मिला । यहां की जीवनशैली अपनी पहचान आप है । यहां के लोग बहुत मीठा बोलते हैं । सभी लोग बहुत मेहनती व धार्मिक हैं, सभी प्रभु से डरते हैं । यहां आकर जाने को दिल नहीं करता ।

घर वापसी

पर जब व्यक्ति घर से निकलता है तो उसे यात्रा समाप्त कर वापस घर आना होता है । इसी दृष्टि से अब हम धर्मभूमि को प्रणाम कर आगे बढ़ने वाले थे । हम वापस आने का प्रोग्राम बनाने लगे । हम मुगल सराय स्टेशन पर पहुंचे ।

फिर उसी स्टेशन से राजधानी गाड़ी द्वारा रात्रि को २ बजे चले, हमें टिकट मिल चुकी थी, सुबह देहली पहुंचे । देहली से बस द्वारा अपने घर पहुंचे । हम यात्रा से वापस आये, अपने-अपने घर पहुंचे । मन में एक प्रेरणास्पद यात्रा थी । इस यात्रा के माध्यम से हम जैन संस्कृति, इतिहास व कला के बारे में जान चुके थे । हमारी लम्बे समय से पलने वाली इच्छा पूरी हो रही थी । यह यात्रा हमारी देव, गुरु व धर्म के प्रति आस्था का प्रतीक थी । इस यात्रा के कारण हमारा सम्यक्तव दृढ़ हुआ है । इस यात्रा के माध्यम से हमें हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार में तीर्थ यात्रा करने का अवसर मिला । इन प्रदेशों का रहन-सहन, सभ्यता, भाषा व परम्पराओं को जानने का अवसर मिला । इन तीर्थ स्थानों के पुद्गल प्रमाण इतने पवित्र हैं कि जन्म जन्म तक आत्मा निर्मल व पवित्र हो जाती है । इन तीर्थों पर पहुंचते ही मन

में अद्‌भुत उत्साह पैदा होता है । तीर्थों में हुई घटनाएं आंखों को आ घेरती हैं । इतनी लम्बी यात्रा में हमें बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ है । हमने जो पुस्तकों में ज्ञान पढ़ा था, गुरुओं से जाना था सभी चिन्तन को मौके पर जाकर देखने का अवसर मिला । इससे हमारी आस्था बलवती हुई । हमें इस यात्रा के माध्यम से एक-दूसरे को समझने का अच्छा मौका मिला । हम अपने गुरुओं से मिले । उनके दर्शन किये, उनसे अपने प्रश्नों का समाधान किया । एक इतिहास व पुरातन के विद्यार्थी होने के नाते हमें इस यात्रा से जैन, बौद्ध, हिन्दू पुरातन स्थलों को देखने का अवसर मिला । सारी यात्रा श्रद्धामयी वातावरण में हुई । भारत की पुण्यभूमि पर अनेकता में एकता के दर्शन हुए । ऐसा वातावरण-गृहस्थी में मिलना मुश्किल है । घर में रहकर व्यक्ति घरेलू, समस्याओं में उलझा रहता है । ऐसे में मानसिक शांति के लिये तीर्थ यात्रा का अपना महत्व है । हमें सारी यात्रा में कहीं भी किसी तरह की रुकावट नहीं आई । छोटी-मोटी तकलीफ के इलावा सारी यात्रा सद्‌भावना के माहौल में सम्पूर्ण हुई । यह यात्रा हमारे रिश्ते को भी दृढ़तम करने में मील का पत्थर साबित हुई है । मैंने अपने धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन के साथ इकट्ठे यात्रा करने का वायदा पूरा किया । अब अगले प्रकरण में हमारे द्वारा की गई अन्य तीर्थ यात्राओं का वर्णन है जो हम दोनों ने की थीं।

प्रकरण १३

हमारे द्वारा संक्षिप्त यात्राएं

यह यात्राएं एक से तीन दिन में सम्पन्न हुई । सभी यात्रा का सम्बन्ध जैन तीर्थों से था । यहां मैं सबसे पहले श्री महावीर जी की यात्रा का वर्णन करूंगा । इसके पीछे कारण था, जब मैं कुछ अस्वस्थ था तो मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन ने यह मन्नत मांगी, "हे भगवान! अगर मेरा धर्म भ्राता पुरूषोत्तम स्वस्थ हो जाए तो मैं रवीन्द्र जैन तुम्हारे चरणों, उसके साथ आकर वन्दन करूं ।" मैं धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगा । प्रभु महावीर की करुणा का यह चमत्कार था कि मुझे लगा कि श्री महावीर जी तीर्थ चमत्कारी है । मेरी तकलीफ से पहले हम दोनों में से वहां कोई नहीं गया था । इस स्टेशन का नाम श्री महावीर जी भी जरूर पता था ।

जब मैं स्वस्थ हो गया, तो मैंने इस तीर्थ के बारे में पता किया । मुझे पता चला कि यह स्थान दिल्ली-भरतपुर लाईन पर है । हम दोनों ने यात्रा का कार्यक्रम बनाया । यह यात्रा मेरे धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन की मेरे लिये की प्रार्थना का फल थी । इस प्रार्थना में मैंने शक्ति देखी है । अब उस दिन से लेकर आज तक वर्ष में वह मेरे लिये प्रार्थना रखे श्री महावीर जी जाता है ।

तीर्थ इतिहास :

इस तीर्थ का इतिहास ३०० वर्ष से ज्यादा पुराना है । यह तीर्थ राजस्थान के जिला करेली में स्थित है । यह स्थान देहली से ३०० कि.मी. दूर है । आगरा से भी यहां पहुंचा जा सकता है, आगरा से १७० कि.मी. है । पहले इसका जिला सवाई माधोपुर था । अब यह करेली जिला में हैं इस

नगर का प्राचीन नाम चांदनपुर था । यहां मीणा जाति का एक गवाला रहता था । वह सरलात्मा व प्रभु भक्त था । उसके पास एक गाय थी, वह गाय अन्य पशुओं के साथ चरने एक टीले पर जाती थी । वह गाय जब शाम को वापिस आती तो उसके स्तनों में दूध गायब होता । इसका कोई कारण उस गवाले की समझ में नहीं आ रहा था । इस कारण गवाला संशय में पड़ गया । आखिर दूध की चोरी कौन करता है ? इसकी पड़ताल करनी चाहिये । गवाला इसी सोच में अगली सुबह उठा । उसने उस गाय का पीछा किया, गाय एक टीले पर पहुंची । गाय के स्तन पर दूध झरने लगा, गवाला हैरान हुआ । फिर चमत्कार के बारे में उसने सोचना शुरु किया । इस टीले में अवश्य ही कोई खजाना छुपा है । इसी कारण गाय ने चमत्कार दिखाया है । गवाला घर चला गया । उसने सोचा कि मैं कल खुदाई करूंगा, खजाने की तलाश करूंगा ।

ग्वाला रात्रि को सोकर सुबह जागा । अगली सुबह उसने सारा टीला खोदा, पर कहीं कुछ न मिला । फिर थक कर घर आया । अगली रात्रि को स्वप्न में उसे आकाशवाणी हुई, "टीले को धीरे से खोदो । इसके गहरे में प्रभु प्रतिमा है, उसे आराम से निकाल लेना ।"

आकाशवाणी सुनकर गवाला प्रसन्न हुआ । उसने देववाणी के अनुसार कार्य प्रारम्भ किया । भूगर्भ से भगवान महावीर की सुन्दर प्रतिमा निकाली । गवाले ने उस प्रतिमा को एक झोंपड़ी में स्थापित कर दिया । उसी गांव में कुछ जैन श्रावक आये । उन्होंने इस चमत्कारी प्रतिमा की चर्चा सुनी । जब वह प्रतिमा वाले झोंपड़े में पहुंचे, प्रतिमा के दर्शन उन्हें हार्दिक प्रसन्नता हुई । उन्होंने गांव वासियों को बताया "यह प्रतिमा भगवान महावीर की है, हम इसकी पूजा

के लिये आपके गांव में मन्दिर की स्थापना करना चाहते हैं ।''

चमत्कार :

गांव वासीयों ने सहर्ष एक ऊंचे टीले पर मन्दिर वनाने की आज्ञा प्रदान की । कुछ समय वाद मन्दिर वनकर तैयार हो गया । श्रावक जन आने लगे । गांव में भव्य मेला लगा । प्रभु महावीर की ताम्रवर्ण प्रतिमा को रथ में वैठाया गया, पर यहां भी एक चमत्कार घटित हुआ । रथ एक कदम भी आगे न वढ़ा, पुनः दूसरा रथ लाया गया । दूसरे रथ की स्थिति भी वैसी ही रही । रथ को खींचने के लिये कई पशु लगाये गये, पर रथ वहां ही खड़ा रहा । इतने में आकाशवाणी हुई, ''जव तक यह गवाला प्रतिमा को हाथ नहीं लगायेगा, तव तक रथ नहीं चलेगा ।''

इस देववाणी के अनुसार भीड़ में से उस गरीव गवाले को वुलाया गया । उसने प्रतिमा को स्पर्श किया । उसने प्रतिमा को सिर पर उठाकर रथ में स्थापित आसन पर विठाया गया । फिर रथ को स्पर्श किया, रथ शीघ्रता से आगे वढ़ा । तव से यह परम्परा वन गई है कि इस गवाले के परिवार वाले रथ को हाथ लगाते हैं, तभी रथ यात्रा शुरु होती है ।

यह स्थान अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का है । यहां हर जाति, वर्ण, धर्म के लोग आते हैं । निम्न वर्ग माने-जाने वाले लोग प्रभु महावीर को अपना सर्वस्व मानते हैं । यहां महावीर जयन्ति पर एक मेला लगता है जिसका सारे राजस्थान में वहुत महत्व है । सभी लोग अपने-अपने गांवों से नाचते-गाते आते हैं, अपनी परम्परा के अनुसार प्रभु महावीर की पूजा अर्चना करते हैं ।

इस मन्दिर से अनेक चमत्कारी घटनाएं जुड़ी हुई हैं । एक मंत्री जोधराज पर झूठा आरोप लग गया । राजा ने उसे फांसी का अकारण हुक्म सुनाया । सैनिक उसे वध स्थान पर ले जा रहे थे । रास्ता जंगल से गुजरता था, तभी उस मंत्री ने रास्ते में प्रभु महावीर का मन्दिर देखा । उसने प्रभु महावीर को वन्दना की, फिर उसने मन्नत मानी - अगर मैं इस दोष से मुक्त हो जाऊं तो प्रभु महावीर का तीन शिखर का भव्य जिनालय वनाऊंगा । सिपाही मंत्री जोधराज को जंगल में ले गये । उसे तोप के सामने खड़ा किया गया । गोला दागना शुरु किया । तोप का गोला जोधराज के पांव के पास आकर ठण्डा हो गया । मंत्री को मारने के लिये जितने गोले दागे गये, सव ठण्डे पड़ते गये । कोई भी गोला उसे नुक्सान नहीं पहुंचा सका । इस वात की सूचना राजा को दी गई । राजा ने कहा, "तुम्हारे में क्या शक्ति है, जो तोप के गोले को टंडा कर रही है ।"

दीवान जोधराज ने कहा, "महाराज ! मेरे पास तो चांदनपुर के स्वामी भगवान महावीर की शक्ति है । मुझे उसके नाम का आधार है और कोई शरण नहीं ।"

राजा ने प्रभु महावीर की शक्ति को पहचानते हुए, मन्त्री को दोषमुक्त कर दिया । मन्त्री ने उसी टीले पर एक भव्य तीन शिखर के मन्दिर का निर्माण कराया । जिसमें अव काफी परिवर्तन हो चुका है । इस मन्दिर में प्रभु महावीर के अतिरिक्त एक वेदी में प्रभु पुष्पदंत व प्रभु ऋषभदेव की स्थापना की गई । आसपास की वेदीयों में सभी तीर्थंकरों की प्राचीन प्रतिमायें स्थापित की गई । यह मन्दिर अव विशाल तीर्थस्थल है । यहां अनेकों शोध संस्थान मन्दिर व धर्मशालाओं का समूह है । वड़ी वात यह है कि यहां सारा संसार प्रभु महावीर की इस चमत्कारी प्रतिमा के दर्शन करने

आता है । जयपुर नरेश भी इस मन्दिर के परम भक्त थे । उन्होंने दो गांव इस मन्दिर को भेंट किये थे । यह स्थल विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल बनता जा रहा है । दिगम्बर समाज का यह पूज्नीय तीर्थ मथुरा, भरतपुर, बयाना, हिंडोन के बाद आता है । इस तीर्थ के लिये दिल्ली व आगरा से बसें भी मिल जाती हैं ।

यहां इस मन्दिर के साथ ही एक चरण छतरी है, यह वह स्थान जहां से यह प्रतिमा निकली थी । इस प्रतिमा का च उसी परिवार को जाता है, जिस परिवार ने इस प्रतिमा की खोज की थी । यह प्रतिमा कई तरह से अतिशय पूर्ण है । प्रतिमा की आयु १००० वर्ष से ज्यादा है, यह मुस्कुराती प्रतिमा है । ऐसी प्रतिमा भगवान महावीर की कम मिलती है । चेहरे में वीतराग झलकती है । अभी हिंडोन से निकली प्रतिमाए मन्दिर में विराजमान की गई हैं जो इतनी ही प्राचीन हैं।

इस मन्दिर के पास कमलावाई का मन्दिर है, जो प्रभु पार्श्वनाथ को समर्पित है । सारा मन्दिर कांच का बना है । इसमें प्रभु पार्श्वनाथ के पूर्व भवों का चित्रण किया गया हैं । चौवीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएं हैं, अनेकों तीर्थंकरों के कांच चित्र हैं । साथ में विशाल कन्या महाविद्यालय है । यहां २२०० से अधिक बालिकाएं शिक्षा अर्जित करती हैं ।

गंभीर नदी के पार शांतिधाम नामक मन्दिरों का एक परिसर है, जिसका निर्माण आचार्य शांतिसागर महाराज जी की प्रेरणा से श्रावकों ने करवाया था । इस मन्दिर में खड़ी भगवान शांतिनाथ जी की ३१ फुट की प्रतिमा है । चारों तरफ २४ तीर्थंकरों की प्रतिमाएं हैं जो पीत जैसलमेरी पत्थर से निर्मित है । भगवान शांतिनाथ जी की प्रतिमा के एक तरफ भगवान पार्श्वनाथ, दूसरी ओर भगवान महावीर स्वामी

हैं । इस मन्दिर के नीचे दो मन्दिरों में भगवान नेमिनाथ व भगवान पार्श्वनाथ की विशाल वैठी प्रतिमाएं हैं । यहां खरीदो फरोखत की अच्छी मार्किट है । भोजनशालाएं हैं । होटलों में शुद्ध शाकाहारी भोजन उपलव्ध है । यहां एक विशाल गुरुकुल व संस्कृत पाठशाला है, जहां दसवीं कक्षा तक पढ़ाई समाज की ओर से निःशुल्क दी जाती है । दिगम्वर समाज ने यहां मन्दिर के अन्दर जैनशोध पीठ स्थापित कर रखी है । इसकी अपनी पत्रिका है । यहां जैन मन्दिर के प्रचार, प्रसार की सामग्री विपुल मात्रा में उपलव्ध होती है । यात्रियों की सुविधा का पूरा ध्यान रखा जाता है । यह मन्दिर की वस स्टेशन तक सात किलोमीटर की यात्रा करती है । वह यात्रियों को लाती है और स्टेशन पर छोड़ती है । यह सेवा दिन-रात चालू रहती है । इसमें कभी विलम्व नहीं होता । इतनी सुविधाओं के कारण यात्रा सरल हो जाती है । यात्री हर ट्रेन से उतरते हैं, चढ़ते हैं । स्थानीय ग्रामीण प्रभु भक्त हैं । यहां धर्मशालाएं में कुली आसानी से उपलव्ध होते हैं । यहां सुरक्षा व्यवस्था दृढ़ वनाई गई है । यात्री के जानमाल को कोई हानि न हो, इस वात का ध्यान रखा जाता है । यहां पूजन सामग्री के लिये मन्दिर में अलग केन्द्र है । मन्दिर के वाहर वाजार में हर प्रकार के जैन भजनों की कैसेट, वीडियो, पुस्तकें आसानी से उपलव्ध होती हैं । मन्दिर में यहां एक पुस्तक विक्रय केन्द्र है । मन्दिर का भव्य कार्यालय है जो दिन रात खुला रहता है । क्योंकि यात्री २४ घण्टे आते-जाते रहते हैं ।

इसी मन्दिर के पास एक और भव्य जैन मन्दिर है, जिसकी अपनी मार्किट है । यहां भी एक धर्मशाला है, यहां सभी धर्मशालाएं मन्दिर के अधीन हैं । यात्रियों के लिये डी-लक्स कमरो से लेकर साधारण कमरे हैं, जिनका किराया

बहुत ही कम है । यात्रियों से भरा होने के बावजूद भी यहां अनुपम शांति है । इस तीर्थ के रेलवे स्टेशन पर भी इस मन्दिर व प्रतिमा का माडल लगाया हुआ है । यहां के स्थानीय ग्रामीण लोग जैन संस्कारों में रंगे हैं । उन्हें जैन यात्रियों से अच्छा व्यवहार करना आता है । यहां सरकारी विद्यालय भी है ।

भारत सरकार व राजस्थान सरकार इस मन्दिर व तीर्थ के विकास की ओर विशेष ध्यान देती है । इस तीर्थ की प्रबंधक समिति का कार्यालय जयपुर में स्थित है । शांतिधाम में एक नया मन्दिर स्थापित हो चुका है । यहां सब मन्दिरों में भव्य कीर्ति स्तम्भ हैं । शांतिधाम के सामने एक चैत्य और है । शांतिधाम मन्दिर परिसर रेत के टीलों से घिरा हुआ है । इसकी दूसरी तीर्थ की यात्रा मैंने नवम्बर २००१ प्रभु महावीर के २६०० साला जन्म कल्याणक पर सपरिवार की । तब तक मैं इस तीर्थ की प्रगति को देखकर प्रसन्न हुआ । यहां यात्रियों की भीड़ के कारण प्रभु महावीर स्वयं हैं । पर यहां की व्यवस्था का भी इसमें प्रमुख हाथ है । ऐसी व्यवस्था हमें आनन्दजी कल्याणजी पेढी समेदशिखर (बिहार) में देखने को मिली ।

यह तीर्थ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र है, इसके अतिशय का वर्णन हम ऊपर कर चुके हैं । इसी चमत्कारी प्रभाव के कारण हम यहां आये । मैंने यह यात्रा अपने धर्मभ्राता रविन्द्र जैन के साथ की थी क्योंकि ऐसी उसकी भावना थी ।

तीर्थ श्री महावीर जी की यात्रा :

मैं अपने धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन के साथ दिल्ली की ओर रवाना हुआ । यहां हम दोपहर को पहुंचे । दोपहर को जनता मेल ट्रेन आती है । यह ट्रेन सैन्टरल वाम्बे को जाती

है । गांव में कुछ खेती होती है, गांव के ज्यादा लोग फौज में है । मन्दिर के ज्यादा मुलाजम भी इसी गांव के हैं । यहां स्थानीय ग्रामीणों में प्रभु महावीर व जैन धर्म के प्रति अथाह श्रद्धा है ।

फिर हम मुख्य मन्दिर के वाहर शांतिधाम में पहुंचे । इसके लिये हमें नदी पार करनी पड़ी । यहां चौवीस भगवान की भव्य प्रतिमाओं को प्रणाम किया । वापस फिर गांव में आये । मंदिर के पास एक अन्य मन्दिर के दर्शन किये । वापसी पर हम वस द्वारा महुआ पहुंचे । यहां से भरतपुर, मथुरा होते हुए वापिस दिल्ली पहुंचे । यह ऐसे क्षेत्र का सफर था जो मेरे धर्म की आस्था को दृढ़ करने में सहायक वना । इस यात्रा में मेरे धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन की मेरे स्वास्थ्य के लिये मानी मन्नत पूरी हुई । इससे मुझे अनुभव हुआ कि मेरा शिष्य मेरी सेहत का कितना फिक्र करता है । यह फिक्र उसका शुरु से है । आज भी प्रणाम के वाद मेरे स्वस्थ्य का समाचार ज्ञात करना अपना धर्म समझता है । उस का प्रणाम समर्पण की जीती-जागती मिसाल है । वह मेरी हर आज्ञा को पूर्ण रूप से अपनी शक्ति अनुसार पूरा करता है । कई वार मैं सोचता हूं कि यह व्यक्ति किस मिट्टी का वना है, जिसे अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्य की कोई चिन्ता नहीं ।

प्रभु महावीर की भाषा में कहें, 'विनय मूल धम्भ' "विनय धर्म का मूल है ।" विनय और श्रद्धा उसके आसपास चक्कर लगाती है, उसके जीवन में हर पल घटित होती है, सचमुच गुरु की मेहनत, शिष्य के चरित्र से झलकती है । सो अपने इन्हीं गुणों के कारण सरलता व सहज भाव स्वयं प्रकट हो जाता है ।

दिल्ली यात्रा-महरोली :

इस यात्रा में हमें वापसी पर देहली आना पड़ा, देहली तो कई वार आना होता रहता है, पर इस यात्रा में हमने आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज के दर्शन व वन्दन का लाभ लिया । अव उनसे काफी परिचय हो चुका था । सो उनसे खुलकर ज्ञान चर्चा हुई । हमने उन्हें अपना सम्पूर्ण पंजावी साहित्य अमेरिका, कैनेडा में वांटने के लिये दिया । इन देशों में व्याप्त मात्रा में पंजावी हैं । यूनीवर्सिटियों में धर्म का अध्ययन होता है । एक वार हमें देहली के पास महरोली स्थित दादावाड़ी तीर्थ देखने का सौभाग्य प्रथम वार इस यात्रा में मिला । यह देहली का प्राचीन तीर्थ है, मुसलमानों के आगमन से कुछ समय पहले देहली में दादा मणिधारी श्री जिनचन्द्र का स्वर्गवास हुआ था । यह मन्दिर जंगलों में है । इनकी समाधि चमत्कारी है । अव तो यहां विशाल धर्मशाला, भोजनशाला है । दादावाड़ी में भगवान ऋषभदेव का मन्दिर है ।

एक कृत्रिम जिनालय का समूह है जो शत्रुंजय तीर्थ की आकृति वनाने की सुन्दर चेष्टा की गई है । धरती पर शत्रुंजय तीर्थ को प्रदर्शित किया गया है । यह एक अच्छा उपक्रम है । जो शत्रुंजय महातीर्थ के दर्शन नहीं कर सकते । इस स्थान के दर्शन . शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा की प्रेरणा ले सकते हैं ।

हमारी तिजारा यात्रा :

हम इन तीर्थ यात्राओं के वाद खामोश वैठ गये थे, एक वार अचानक देहली जाना हुआ । हमारे पास खुला समय था । यह अवसर विश्व पंजावी सम्मेलन का था । हमें एक पुस्तक स्व: पूज्य प्रवर्तक श्री शांतिस्वरूप जी महाराज

को समर्पित करनी थी । यह अभिलाषा हमारी गुरुणी उपप्रवंतनी साध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की थी । उन्हीं की इच्छा को पूर्ण करने हमें मेरठ जाना पड़ा । मेरठ जैनों की अच्छी आवादी वाला शहर है ।

देहली से २०० कि.मी. दूरी पर है । सम्मेलन की एक शाम पहले मेरठ रवाना हुए । प्रर्वत्तक पूज्य श्री शांतिस्वरूप जी महाराज के पहले हमने दर्शन नहीं किये थे । परन्तु गुरुणी जी के आदेश का पालन जरूरी था, सो शाम को यहां जाने का कार्यक्रम वन गया । पूज्य श्री शांतिस्वरूप जी महाराज आगमों के महान ज्ञाता थे । रात्रि को हम जैन नगर मेरठ में पहुंचे । यह नगर भी पूज्यश्री की देन है । पाकिस्तान से आये सहधर्मी भाईयों को इस नगर में वसाया गया है । इस नगर में जैन स्थानक, हस्पताल, समाधि, धर्मशाला, मन्दिर व पार्क है । नगर के वाहर अच्छा अतिथिगृह है । मेरठ नगर इतिहासिक नगर है । अधिकांश स्थानीय आवादी मुस्लिम है । फिर जैनों का नम्वर आता है । इन जैनों में स्थानीय व पाकिस्तान से आये जैन सम्मिलित हैं । स्थानीय जैन अधिकांश दिगम्वर हैं । हम देर रात्रि पहुंचे । पूज्य श्री के दर्शन किये । उनका आशीर्वाद प्राप्त किया । महासती जी का सन्देश दिया, उन्हें पुस्तक भेंट की । महाराजश्री पुस्तक को देखकर प्रसन्न गये । वहां के प्रधान ने फोटोग्राफर का प्रवन्ध किया । हम कुछ घंटे स्थानक में रुके, फिर मेरे धर्मभ्राता ने मझे परामर्श दिया कि क्यों न देहली वापसी पर तिजारा तीर्थ की यात्रा कर ली जाये । हम रात्रि मेरठ जैन नगर में रुके । सुवह होते सम्मेलन में भाग लेने के लिये देहली की ओर रवाना हुए । यहां आकर हमने श्री तिजारा तीर्थ का कार्यक्रम वनाया ।

श्री तिजारातीर्थ :

यह तीर्थ दिल्ली से ११७ कि.मी. दूर है । दिल्ली, रिवाड़ी, अलवर, जयपुर, महावीर जी से यह सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है । यहां हर रविवार को मेला लगता है । इसका नाम प्राचीन ग्रन्थों में देहर है । यह १९५६ की श्रावण शुक्ला संवत २०१३ में भगवान चन्द्रप्रभु की श्वेतवर्ण की दिव्य चमत्कारी प्रतिमा भूगर्भ से प्राप्त हुई थी । यह अतिशय पूर्ण तीर्थ है । यहां लोगों की मनोकामना पूर्ण होती है । यहां भव्य मन्दिर में समोसरण वनाया गया है । पास भव्य धर्मशाला वनी है । जहां से प्रभु चन्द्रप्रभु की प्रतिमा प्राप्त हुई थी । वहां चरण छतरी वनी हुई है । मन्दिर के सामने मान स्तम्भ है ।

यहां एक अन्य मन्दिर है, जो प्रभु पार्श्वनाथ को समर्पित है । इस मन्दिर में मनोज व सातिशय प्रतिमाएं विराजमान है । यहां ३०० कमरों की धर्मशाला है । सभी सुविधाओं से युक्त है ।

भगवान चन्द्रप्रभु की प्रतिमा का स्वप्न साहुशांति प्रसाद जी जैन को आया था । उसी स्थान पर यह भव्य मन्दिर वना है । इसी मन्दिर के दर्शन करने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ । हम वस द्वारा गुड़गांव के मार्ग से तिजारा पहुंचे । तिजारा राजस्थान के अलवर जिले में पड़ता है । यह स्थान पत्थरों की खानों से भरा पड़ा है । यहां मूर्ति व पत्थर का व्यापार वहुत होता है । इस स्थान पर हम दोनों दोपहर के समय पहुंचे । मन्दिर में कुछ यात्री थे । मन्दिर के व्यवस्थापक ने हमें रुकने को कहा । हमारे पास समय का अभाव था । सर्वप्रथम मन्दिर के मान स्तम्भ को प्रणाम किया । प्रभु चन्द्रप्रभु की प्रतिमा एक सुन्दर वेदी में

विराजमान थी । वहां प्रभु चन्द्रप्रभु की पूजा अर्चना की, मन को अभूतपूर्व शांति मिली । मन प्रसन्नता से झूम उठा ।

यहां हमने वह स्थान भी देखा जहां मस्तक झुकाने से हर प्रकार की शारीरिक व्याधि दूर हो जाती है । मन्दिर का परिसर विशाल है । प्रवंधकों ने हमें खाने का आमन्त्रण दिया । हमें उनके अनुग्रह के आगे शीश झुकाना पड़ा । हम खाना खाकर सन्तुष्ट हुए । फिर मन्दिर के आसपास निहारा । यहां मन्दिर के आसपास पहाड़ियां हैं । मन्दिर एक टीले पर स्थित है ।

यहां एक छोटा सा वाजार है । यहां दैनिक उपयोग की हर वस्तु आराम से मिल जाती है । यहां धर्म प्रचार सामग्री, भजनों के ऑडियो कैसेट, वीडियो कैसेट, पुस्तकें हर समय मिलती हैं । यहां मन्दिर में धर्मप्रचारक आते जाते रहते हैं, यह मन्दिर चाहे नया है, पर यहां की प्रतिमाएं वहुत प्राचीन हैं । प्रतिमा इतनी आर्कषक है कि जव कोई चन्द्रप्रभु भगवान का वर्णन करता है, इसी प्रतिमा का उल्लेख होता है । यह प्रतिमा १००० वर्ष प्राचीन लगती है । इस प्रतिमा पर कोई शिलालेख नहीं, फिर भी यह स्थान ऐसा है, जहां पहुंचते चन्द्रपुरी के प्रभु चन्द्रप्रभु की याद आ जाती है । इस तीर्थ के वारे में यह वात प्रसिद्ध है :-

"नगर तिजारा, देहरा, अलवर राजस्थान,
जहां भूमि से प्रगटे, चन्दाप्रभु भगवान ।

पिछले सालों में यहां यात्रियों का आगमन काफी वढ़ा है । इन गांवों में खेती की जमीन कम ही पर्याप्त है । पर यह तीर्थ श्री महावीर जी जैसी विशाल संस्थाओं से सुसज्जित नहीं । कुछ भी हो इस तीर्थ पर आकर मेरी आस्था को नया आयाम मिला । यह तीर्थ व प्रतिमा दिगम्वर जैन परम्परा से जुड़ी है । इसी कारण अधिकांश लोग दिगम्वर ही यहां आते

हैं । शारीरिक कष्टमुक्ति के लिये यहां स्थानीय लोग भी आते हैं । यह तीर्थ में मेरी आस्था जुड़ी है ।

हमारी हस्तिनापुर यात्रा :

हस्तिनापुर का नाम आते ही महाभारत का चित्र दिमाग में आ जाता है । भगवान ऋषभदेव के एक पुत्र ने इस नगर का निर्माण किया था । महाभारत के अनुसार यह कौरवों की राजधानी थी । यह कुरु देश में पड़ती थी । इस नगर का इतिहास बहुत गौरवमय है । यहां प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को एक वर्ष घूमने के बाद आहार मिला था । इस दान का लाभ उनके पोत्रे श्रेयांस कुमार ने लिया । प्रभु एक वर्ष तक घूमते रहे । कोई उन्हें कन्या भेंट करता, कोई हाथी और कोई घोड़ा, पर भोजन कोई न देता क्योंकि लोग दानविधि नहीं जानते थे । यह भगवान के पूर्व जन्म के अशुभ फल का उदय था । भोजन न मिलने के पीछे एक दिलचस्प कहानी है ।

पूर्वभव कथा :

एक बार प्रभु का जन्म राजा के रूप में हुआ, उस समय सभ्यता इतनी विकसित नहीं थी । गांवों से किसान इकट्ठे होकर आये, राजा से कहने लगे, "प्रभु हमारे पशु फसल खा जाते हैं । खेतों से कुछ नहीं निकलता, कोई समाधान करें ताकि हमारी खेती बची रहे ।"

राजा ने कहा, "तुम उनके मूंह पर छिपकली बांध दो, तुम्हारी फसल की रक्षा हो जायेगी ।"

ग्रामीणों ने अपने पशुओं के मूंह पर छिपकली बांध दी, भोले किसानों ने उन पशुओं के आगे दाना पानी रखा, मूंह बंधा होने के कारण वह कुछ न खा सके ।

अगली सुबह किसान फिर आये और कहने लगे,

"राजन् ! हमारे पशु तो कुछ खाते नहीं ।" राजा ने कहा, "क्या तुमने खाने के समय उनके मूंह से छिपकली खोल दी थी ?"

किसानों ने कहा, "हमें आपने बांधने को कहा था, खोलने को नहीं !"

राजा ने कहा, "जाओ पहले छिपकली खोलो ।" किसानों ने मुंह पर बंधी छिपकली खोल दी । पशुओं ने खाना शुरु कर दिया । इस पापकर्म कां फल उन्हें इस जन्म में भोगना पड़ा ।

शास्त्र कहते हैं कि यही राजा अगले जन्म में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव बना, फिर उन्होंने गृह त्यागा, उनके साथ अनेकों राजा भी साधु बने । अधिकांश तप से डर कर भाग गये । प्रभु अकेले रह गये । भोजन की तलाश में हस्तिनापुर पहुंचे । श्रेयांस कुमार महल में बैठा नगर की शोभा देख रहा था । प्रभु को देखते ही उसे मन प्रभव ज्ञान हो गया । उसे याद आया कि पूर्वभव में वह भी एक श्रमण था । श्रमण को दान देने की विधि याद आ गई । इस प्रकार दान देने के कारण वह इस युग का प्रथम दानी कहलाया । राजा श्रेयांस कुमार भगवान ऋषभदेव का पोत्र व तक्षशिला नरेश बाहुबली का पुत्र था ।

प्रभु ऋषभदेव की याद में आज भी लोग वरसी तप करते हैं । जिस स्थान पर प्रभु का पारना हुआ था, वहां आते हैं । यह दिन अक्षय तृतीया था । यह पारणा इक्षुरस से हुआ था, इसी कारण लोग भी इक्षुरस से पारना करते हैं, जैसे प्रभु ऋषभदेव का पारना पोत्र द्वारा सम्पन्न हुआ, उसी तरह वरसी तप पर आये लोग पोत्र से पारना करवाते हैं । जहां प्रभु ऋषभ को दान मिला था, उस स्थान पर एक प्राचीन स्तूप है । हस्तिनापुर में १६वें तीर्थंकर प्रभु शांतिनाथ

का जन्म हुआ था, जिन्होंने अपने पूर्वभव में एक कबूतर की रक्षार्थ अपना मांस दान किया था । उनके चार कल्याणक यहां हुए । उनके जन्म के समय महामारी फैली हुई थी जो पैदा होते शांत हो गई । उनकी माता रानी अचीरा, पिता राजा विश्वसेन थे। प्रभु श्री शांतिनाथ तीर्थंकरों में से चक्रव्रती बने, उन्होंने ६ खंडों को विजय किया ।

इसी धरती पर प्रभु कुथुनाथ व प्रभु अरहनाथ के चार कल्याणक हुए, वह भी चक्रव्रती बने, फिर उन्होंने तप कर केवल ज्ञान प्राप्त किया । इस प्रकार यहां तीन तीर्थंकरों के १२ कल्याणक हुए हैं ।

यहां प्रभु मुनि सुव्रत स्वामी का समोसरण आया था । इनका समय रामायण के समक्ष ठहरता है । उन्होंने अपना धर्मप्रचार कश्मीर, पंजाव, गंधार तक किया था ।

प्रभु मल्लीनाथ व भगवान पार्श्वनाथ का समोसरण यहां आया था । प्रभु पार्श्वनाथ ने भी कश्मीर, कुरु, पंजाव, गंधार देशों में विचरण किया था ।

अन्तिम तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर यहां जैन धर्म देशना के लिये पधारे तो यहां के राजा ने प्रभु महावीर से संयम अंगीकार किया । यह स्थान प्रभु महावीर की पावन चरणरज से पवित्र है । इस तीर्थ पर साधु हजारों सालों से जैन साधु, आचार्य व श्री संघ यात्रा के लिए रहे हैं । आचार्य जिनप्रभव सूरि ने विविध तीर्थ कल्प में इस तीर्थ का वर्णन ४०० वर्ष पूर्व किया है । यह तीर्थ गंगा के किनारे स्थित था । आज भी गंगा यहां से ७ कि.मी. दूर वहती है । गंगा ने इस तीर्थ का विनाश कई वार किया है । इस तीर्थ की यात्रा मुगल काल में भी होती रही है । पं: वनारसी दास ने भी अपनी यात्रा विवरण में इसका वर्णन किया है । प्राचीनता के नाम पर आज भी यहां स्तूप देखे जा सकते

हैं । गंगा नहर की खुदाई में कुछ प्राचीन प्रतिमाएं निकली थीं जो अब यहां के प्राचीन दिगम्बर मन्दिर में विराजित हैं । यह तीर्थ सिद्धभूमि है । जैन इतिहास के अनुसार विष्णु कुमार मुनि ने ५०० मुनियों की रक्षा की थी । उसी में रक्षा बंधन का पर्व हुआ । इस प्रकार दो पर्वों का सम्बन्ध हस्तिनापुर से हैं ।

आचार्य श्री जिनप्रभव मुनि ने यहां अनेकों प्राचीन मन्दिरों का वर्णन किया है । जो उनके समय स्थापित थे । आज जिस स्थान पर मन्दिर है, वह एक ऊंचे टीले पर स्थित है । ऐसा माना जाता है कि प्राचीन काल में इसी स्थान पर मन्दिर रहा होगा । यहां प्रभु कुथुनाथ, प्रभु अरहनाथ व शांतिनाथ के चरण युगल स्थापित हैं । यह जंगल का क्षेत्र है, यहां प्रकृति के दृश्य अति सुन्दर हैं, यहां प्राचीन विदुर के किले की दीवारें हैं । यहां दो टीले हैं, एक को कौरव का टीला कहते है, दूसरे को पांडव का टीला । यहां भरपूर गन्ने की फसल होती है । इस तीर्थ के बारे में शास्त्रों में आया है :-

"पोत्रं श्री ऋषभदेव श्रेयांसः श्रेयांसन्वितो दाता,
वितं शुद्धेक्षुदयो न विद्यते भूतलेन्थन ।"

अर्थात् ऋषभदेव के समान पात्र श्रेयांस के समान श्रद्धा-भक्ति और भावपूर्वक देने वाला दाता, इक्षुरस के समान शुद्ध-निषेध आहार इस पृथ्वी पर अन्यत्र नहीं हुआ । इसी पारणे की खुशी में श्रेयांस कुमार के पिता महाश्रमण वाहुवली ने उनकी स्मृति में तक्षशिला में चरण चिन्ह स्थापित किये ।

जैन इतिहास में १२ चक्रवर्ती हुए । उनमें से ६ यहां पैदा हुए । इन छठ चक्रवर्तीयों में आठवां चक्रवर्ती नर्क में गया । चौथे व आठवें ने दीक्षा ग्रहण कर मोक्ष प्राप्त

किया । ५, ६, ७ चक्रवर्ती १६, १७, १८ तीर्थंकर के रूप में पैदा हुए । चौथे चक्रवर्ती सनतकुमार थे ।

बीसवें तीर्थंकर मुनि सुव्रत के समय गंगदत गृहपति च कार्तिक सेठ इसी नगर के थे । जो मरकर देवलोक गये ।

इस समय विष्णु कुमार मुनि ने श्री सुव्रताचार्य से दीक्षा ग्रहण की । यहां का राजा नमूचि था । नमूचि जैन साधुओं से घृणा करता था । एक वार सुव्रताचार्य ७०० साधुओं सहित पधारे । नमूचि ने मुनियों को सात दिनों के अन्दर निकलने का आदेश दिया । विष्णुमुनि ने पैर टिकाने के लिये तीन पग पृथ्वी मांगी । राजा नमूचि इस वात के लिये मान गया । मुनि विष्णु कुमार ने एक पग से सारी पृथ्वी को मापा, फिर दोनों पैरों से लवण समुद्र को माप लिया । तीसरा पांव उन्होंने नमूचि के सिर पर रखा, जिससे मुनि संघ का कष्ट टला । इस दिन का नाम रक्षा वंधन पड़ा।

२२वें तीर्थंकर श्री अरिष्टनेमि के एक भव में यहां का राजा शंख था, उसके पिता शंख ने राज्य त्याग मोक्ष प्राप्त किया ।

भगवान अरिष्टनेमि के समय यहां दमदत्त मुनि हुए, जिन्होंने कठिन तप कर मोक्ष प्राप्त किया । यह वल, महावल ने दीक्षा ग्रहण कर देवलोक प्राप्त किया । प्रभु महावीर आयु के ५७वें वर्ष में मिथिला से विहार करते हुए हस्तिनापुर पधारे थे । यहां के राजा शिव ने अपने पुत्र को राज्य देकर संयम ग्रहण किया । प्रभु महावीर का यहां अपने शिष्य गणधर गौतम से वार्तालाप हुआ था ।

यहां ही पोटिल श्रावक व उसकी ३२ पत्नियों ने संयम ग्रहण कर देवगति प्राप्त की ।

तीर्थ दर्शन :

इस धरती पर इतिहास ने अपने को वहुत वार